

नवाचार निवेश : ईस्ट से लेकर वेस्ट तक जारी है लिंगभेद...

महिला स्टार्टअप्स में जोखिम लेने से बचते हैं निवेशक

पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को असमान व्यवहार का सामना आम जीवन में ही नहीं, बल्कि उद्यमिता के क्षेत्र में भी करना पड़ता है। यह स्थिति ईस्ट से लेकर वेस्ट तक के देशों में करीब-करीब एक जैसी ही है। इस बात का खुलासा कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के एक शोध में हुआ है। महिला सशक्तीकरण अभियानों से स्थितियां बदली हैं, पर भेदभावहित कारोबारी व्यवस्था तक पहुंचने में अभी और समय लगेगा। साथ ही महिला उद्यमियों को ट्रेडिंग स्ट्रेटजी क्रेडिट क्राइसिस से पार पाना होगा, ताकि उन्हें सहज तरीके से फंड मिल सके।

महिला उद्यमिता सूचकांक में भी इसका जिक्र

कुछ महीने पूर्व महिला उद्यमियों की योग्यता पर सवाल उठाए गए थे। इस बात का जिक्र वर्ल्ड महिला उद्यमिता सूचकांक की ताजा सूची में किया गया था। 77 देशों के लिए तैयार सूची में भारत को 70वां स्थान मिला था। इस मामले में महिला मुख्यमंत्री होने के बावजूद पश्चिम बंगाल की स्थिति बेहद खराब है। इस रिपोर्ट में यह भी देखा गया कि विकासशील देशों में यह स्थिति ज्यादा चिंताजनक है। हालांकि रिपोर्ट में पुरुष उद्यमियों के समक्ष उत्पन्न मुसीबतों का भी जिक्र किया गया है। दोनों रिपोर्ट्स से साफ है कि महिला उद्यमियों को न सिर्फ अविकसित व विकासशील देशों में, बल्कि विकसित देशों में भी व्यापारिक स्तर पर असमान व्यवहार का सामना करना पड़ता है।

एक्सपर्ट्स ओपिनियन



आभा वालिया
महिला उद्यमी

निवेशक महिलाओं को

आइडिया जनरेटर और एडमिनिस्ट्रेटर मानते हैं, लेकिन कुशल वित्तीय प्रबंधक मानने से कतराते हैं। निवेशकों की दुविधा ये होती है कि पैसा लगाने का जोखिम लगा भी लें तो वो रिटर्न आ पाएगा या नहीं। यह स्थिति कारोबारी रणनीति में महिलाओं के कमजोर पड़ने के कारण है। इसलिए महिला उद्यमियों को फंड हासिल करने के लिए प्रोडक्ट्स प्रेजेंटेशन और इकोनोमिक स्ट्रेटजी पर जोर देने की जरूरत है।

13.5%

नवाचार के क्षेत्र में महिला उद्यमियों की कुल संख्या 16% है। इनमें से केवल 13.5% महिलाएं ही निवेशकों से फंड हासिल करने में सफल हो पाती हैं।



महिला उद्यमी की समस्याएं

- वित्तीय फंडिंग
- कच्चे माल में कमी
- कठिन प्रतियोगिता
- कमजोर मार्केटिंग
- कम जोखिम क्षमता
- पुरुषों का वर्चस्व
- पारिवारिक जिम्मेदारियां

असमान व्यवहार क्यों होता है

रिपोर्ट के अनुसार, इसके पीछे पुरुषवादी सोच सबसे ज्यादा प्रभावी है। निवेशकों का महिला उद्यमियों पर एतबार कम होना है। निवेशकों को लगता है कि विपणन रणनीति के स्तर पर महिलाएं अभी भी दक्षता हासिल नहीं कर पाई हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों में उलझे रहना भी इसके पीछे एक अहम कारण है।

सर्वे में 18,000 उद्यमी शामिल

2010 से लेकर 2015 तक चले कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सर्वे में 18,000 से अधिक उद्यमियों को शामिल किया गया। इसमें स्पष्ट रूप से महिला उद्यमियों के साथ भेदभाव की बातें उभरकर सामने आई हैं।

किसका प्रदर्शन ज्यादा बेहतर

यह देखा गया कि कोई काम अगर महिला और पुरुष, पुरुष और महिला व महिला-महिला मिलकर करें तो सफलता का दर अधिक हो जाता है, जबकि अकेले पुरुषों द्वारा कारोबार चलाने पर प्रदर्शन औसतन कम होता है।

पुरुष उद्यमियों को वरीयता

कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोध में बताया गया है कि निवेश का 90% हिस्सा पुरुष उद्यमियों को मिलता है। केआईटी प्रोफेसर माइकल इवेंस का कहना है कि उद्यमिता के क्षेत्र में महिला उद्यमियों को अलग नजरिए से देखने की प्रवृत्ति निवेशकों में होनी चाहिए। जबकि इसके उलट निवेशक उनमें बहुत कम रुचि लेते हैं। पुरुष उद्यमियों को महिला उद्यमियों की तुलना में दो गुणा से अधिक का निवेश मिलता है। यही कारण है कि महिलाएं बहुत कम फंड हासिल कर पाती हैं। पुरुष निवेशक उन कंपनियों में निवेश करने में ज्यादा रुचि दिखाते हैं जिसे पुरुष चलाते हैं।